

Parrikar releases list of 70 successful products of DRDO

Parrikar says that in the last three years, many of these systems developed by DRDO have been inducted into the defence forces

Bengaluru: Defence Minister Manohar Parrikar released a list of 70 products and systems that have been developed by the Defence Research and Development Organisation (DRDO) for various wings of armed forces.

Parrikar says that in the last three years, many of these systems developed by DRDO have been inducted into the defence forces. Interestingly many sub-systems are also being cited by the minister in the Upper House, with some being at various stages of trials, production and induction.

Parrikar says many of the products, originally developed for the defence forces, can also be used by Central Armed Police Forces (CAPFs), state police units and National Disaster Response Force.

DRDO has organised visits of CAPF's to various laboratories to showcase DRDO's products and capabilities. The minister also said that the Ministry of Home Affairs has shortlisted about 146 items for trials, out of which trials of 78 products have already been completed.

He said a large number of products which can provide protection, day-night situational awareness and support-mobility have also been identified for induction into services by MHA after the trials.

Ever since the NDA government came to power in 2014, DRDO has been put on the radar with Prime Minister Narendra Modi wanting youngsters to be given more responsibilities.

This followed the sacking of DRDO head Dr Avinash Chander in 2015 which came as a warning from the top. The post of DRDO DG and Scientific Advisor to Defence Minister was then split into two. Dr S Christopher was given the mandate of running the labs and Dr G Satheesh Reddy was made Parrikar's advisor.

In the last one year, DRDO seldom made any claims on their achievements and kept many of its missions under wraps.

"DRDO often forgot that they have a user in the waiting with hope. It was a family party often with little focus on R&D. I am not sure if the youngsters got their due. If they (DRDO) have gone silent means, they have been told to prove their worth first. If Make in India needs to succeed DRDO must change their attitude towards private players. The list of 70 items released now would be doubled then," says a former Indian Air Force official, who worked closely with some of the home-grown projects, while on deputation.

Among the list of successful products of DRDO include:

- 1) 81 mm Anti Thermal Anti Laser Smoke Grenade
- 2) Active Antenna Array Unit
- 3) Air Defence Fire Control Radar
- 4) Airborne Early Warning & Control System
- 5) Akash Weapon Systems
- 6) Anti G Suit Mk-III
- 7) Aslesha Radar
- 8) Auto injector Atropine Sulphate
- 9) Bi Modular Charge System

- 10) Bomb 120 mm ILLG
- 11) Bomb 120 mm Mortar HE
- 12) Bomb 81 mm Mortar HE
- 13) Bomb 81 mm Mortar PWP
- 14) Bomb Mortar 51 mm HE Mk-II
- 15) Bomb Mortar 51 mm ILLG
- 16) Bomb Mortar 51 mm Smoke
- 17) Bomb Mortar 81 mm ILLG
- 18) Bridge Layer Tank T-72 (BLT-72)
- 19) Cartridge ERU for aircraft with Package
- 20) Cartridge Primary for 120 mm Mortar
- 21) Cartridge SA 5.56 mm Ball
- 22) Cartridge Signal 16 mm 1A
- 23) Cartridges 105 mm IFG NC
- 24) Cartridges 22" RF Ball
- 25) CBRNe Remotely Operated Vehicle
- 26) Chemical Agent Monitor
- 27) Coastal Surveillance Radar
- 28) Commander's Thermal Imager for T-90
- 29) Commander's Thermal Imager for BMP Tanks
- 30) Commander's Thermal Imager Mk-II for T-72
- 31) Communication Link Controller
- 32) Digital Radar Warning Receiver
- 33) Display Processor
- 34) E1 Link Encryptor
- 35) Electronic Support Measure (ESM), Varuna
- 36) EW Programme - Samudrika
- 37) Explosive Detection Kit
- 38) Explosive Reactive Armour Mk-II
- 39) Fuze 213 Mk-V M2
- 40) Heavy Drop System
- 41) Helmet Mounted Thermal Imaging Camera
- 42) Holographic Sights for Small Weapons
- 43) Identification of Friend and Foe System
- 44) Integrated Multi-function Sight
- 45) Laser based Directed Energy System
- 46) Mine AP M16 and AP NM-14

- 47) Mission Computer
- 8) Mobile Autonomous Robotic System
- 49) Mountain Foot Bridge
- 50) NBC Canister
- 51) NBC Filter
- 52) Optical Target Locator
- 53) Personal Decontamination Kit 54) Phase Control Module
- 55) Pinaka Launcher Mk -II
- 56) Radar Computer I & II
- 57) Radar Warning Receiver
- 58) Resin based Combustible Cartridge Case for 120 mm FSAPDS Mk-II Ammunition
- 59) Revathi Radar
- 60) Rotating Telemetry System
- 61) Secure Adapter for Frame Relay Encryptor
- 62) Secure Multi Interface Link Encryptor
- 63) Shell 105 mm IFG BE Smoke
- 64) Shell 105 mm ILG Mk-I
- 65) Short Range Laser Dazzler
- 66) Three Colour Detector
- 67) Through Wall Imaging Radar
- 68) Weapon Locating Radar (WLR)
- 69) Wheeled Armoured Platform
- 70) X-Band Microwave Power Module

स्वदेशी अनुसंधान संगठनों के बूते आत्मनिर्भर होगी रेल

प्रभु ने बनाया इसरो, डीआरडीओ, सीएसआइआर और आरडीएसओ का समूह

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली:- अंतरिक्ष, रक्षा तथा औद्योगिक अनुसंधान से जुड़े सरकारी संगठन तकनीक के क्षेत्र में रेलवे को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करेंगे। इसके लिए रेल मंत्रालय ने एक स्थायी व्यवस्था तैयार की है। इसके तहत इन संगठनों के अधिकारी रेल अधिकारियों के साथ मिलकर रेलवे के लिए आवश्यक अनुसंधानों तथा संबंधित उत्पादों के विकास के तौर-तरीकों पर चर्चा करेंगे। इन अनुसंधान संगठनों में इसरो, डीआरडीओ, सीएसआइआर, विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग तथा रक्षा उत्पादन विभाग तथा आरडीएसओ के नाम शामिल हैं। इनमें आरडीएसओ रेलवे का अपना विकास और अनुसंधान संगठन है। इस व्यवस्था को स्टैंडिंग इंटर-गवर्नमेंट टेक्निकल कोलैबोरेशन पैनल (सिटकॉप) नाम दिया गया है। यह समूह हर छह महीने में बैठक करेगा। रेल मंत्री सुरेश प्रभु की पहल पर गठित इस समूह का मकसद रेलवे को विदेशी तकनीकों के मोह जाल से बचाना है। प्रभु का मानना है कि जब देश में इसरो और डीआरडीओ जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान संगठन मौजूद हैं तो फिर रेलवे को विदेशों से इंजन और बोगियों के आयात पर क्यों निर्भर रहना पड़ता है। जब भारत में उच्च कोटि के रॉकेट, उपग्रह और मिसाइलें बन सकती हैं, तो वैसा ही रोलिंग स्टॉक क्यों विकसित नहीं हो सकता। दरअसल अब तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया गया है। रेलमंत्री मनोज सिन्हा की अध्यक्षता में सिटकॉप की पहली बैठक 25 अप्रैल को हुई। इसमें पाया गया कि स्वदेशी अनुसंधान संगठनों की मदद से न सिर्फ बेहतर, बल्कि विश्वस्तरीय रेल प्रणालियां तैयार की जा सकती हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि ये प्रणालियां भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप होंगी। इनमें इंजन, कोच, वैगन के अलावा क्रेन, विशेष वाहन और सिगनल प्रणालियां शामिल हैं। इसके अलावा प्रदूषण कम करने, चूहों पर काबू पाने, रेलगाड़ियों में शोर और कंपन घटाने, पैनलिंग, फर्निशिंग कोटिंग तथा धुलाई-सफाई के बेहतर उपकरण बनाए जा सकते हैं।

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : अंतरिक्ष, रक्षा तथा औद्योगिक अनुसंधान से जुड़े सरकारी संगठन तकनीक के क्षेत्र में रेलवे को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करेंगे। इसके लिए रेल मंत्रालय ने एक स्थायी व्यवस्था तैयार की है। इसके तहत इन संगठनों के अधिकारी रेल अधिकारियों के साथ मिलकर रेलवे के लिए आवश्यक अनुसंधानों तथा संबंधित उत्पादों के विकास के तौर-तरीकों पर चर्चा करेंगे। इन अनुसंधान संगठनों में इसरो, डीआरडीओ, सीएसआइआर, विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग तथा रक्षा उत्पादन विभाग तथा आरडीएसओ के नाम शामिल हैं। इनमें आरडीएसओ रेलवे का अपना विकास और अनुसंधान संगठन है। इस व्यवस्था को स्टैंडिंग इंटर-गवर्नमेंट टेक्निकल कोलैबोरेशन पैनल (सिटकॉप) नाम दिया गया है। यह समूह हर छह महीने में बैठक करेगा। रेल मंत्री सुरेश प्रभु की पहल पर गठित इस समूह का मकसद रेलवे को विदेशी तकनीकों के मोह जाल से बचाना है। प्रभु का मानना है कि जब देश में इसरो और डीआरडीओ जैसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान संगठन मौजूद हैं तो फिर रेलवे को विदेशों से इंजन और बोगियों के आयात पर क्यों निर्भर रहना पड़ता है। जब भारत में उच्च कोटि के रॉकेट, उपग्रह और मिसाइलें बन सकती हैं तो वैसा ही रोलिंग स्टॉक क्यों विकसित नहीं हो सकता। दरअसल अब तक इस ओर ध्यान ही नहीं दिया गया है। रेलमंत्री मनोज सिन्हा की अध्यक्षता में सिटकॉप की पहली बैठक 25 अप्रैल को हुई। इसमें पाया गया कि स्वदेशी अनुसंधान संगठनों की मदद से न सिर्फ बेहतर, बल्कि विश्वस्तरीय रेल प्रणालियां तैयार की जा सकती हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि ये प्रणालियां भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप होंगी। इनमें इंजन, कोच, वैगन के अलावा क्रेन, विशेष वाहन और सिगनल प्रणालियां शामिल हैं। इसके अलावा प्रदूषण कम करने, चूहों पर काबू पाने, रेलगाड़ियों में शोर और कंपन घटाने, पैनलिंग, फर्निशिंग कोटिंग तथा धुलाई-सफाई के बेहतर उपकरण बनाए जा सकते हैं।